प्रवेश

इस वर्ष अब तक के सर्वाधिक 21 गुजराती विद्यार्थियों ने लिया प्रवेश

गुजरातियों को पसंद आने लगी आईआईटी-गांधीनगर

19 राज्यों में महाराष्ट्र के 33, राजस्थान के 24 विद्यार्थी शामिल

अहमदाबाद

ahmedabad@patrika.com

सात वर्ष पहले गुजराती लोगों को गुजरात में ही उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर वर्ष 2008 में शुरू हुआ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर (आईआईटी-जी) अब गुजरातियों की पसंद आने लगा है।

इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि संस्थान में प्रवेश लेने वाले गुजराती लोगों की संख्या वर्ष प्रति वर्ष बढ़ रही है। इस शैक्षणिक वर्ष 2014-15 में अब तक के सर्वाधिक 21 गुजराती विद्यार्थियों ने आईआईटी-गांधीनगर में बेचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बीटेक) पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है।

आईआईटी-गांधीनगर में प्रवेश पाने वाले सभी विद्यार्थियों को रविवार को उपस्थित होना था। इस शैक्षणिक वर्ष 2004-15 में यहां कुल 142 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। इसमें छात्राओं की संख्या 14 जबकि छात्रों की संख्या 128 है। इसमें सर्वाधिक 33 विद्यार्थी महाराष्ट्र के हैं। संख्या के लिहाज से 24 विद्यार्थियों के साथ दूसरा स्थान राजस्थान का है। तीसरा स्थान 21 विद्यार्थियों के साथ गुजरात का है। इस वर्ष कुल 19 राज्यों के विद्यार्थियों ने आईआईटी-जी में बीटेक में प्रवेश लिया है।

यहां प्रवेश पाने वाले सभी विद्यार्थियों को सोमवार से आईआईटी गांधीनगर के प्रोफेसरों की ओर से पांच सप्ताह का फाउंडेशन कोर्स कराया जा रहा है जिसमें इन्हें इतने समय की पढ़ाई के बाद खेलकूद व संस्थान के नीति-नियमों से जुड़ी जानकारी दी जाएगी।

आईआईटी-जी में प्रवेश लेने वाले ज्यादातर ऐसे विद्यार्थी हैं जिन्होने आईआईटी-बॉम्बे और आईआईटी दिल्ली जैसे नामी संस्थानों में प्रवेश ना लेकर आईआईटी गांधीनगर को प्रवेश लेने के लिए चुना। जबकि उनके पास बॉम्बे, दिल्ली आईआईटी में भी प्रवेश लेने का विकल्प था। आईआईटी गांधीनगर को चुनने के पीछे इसकी कुछ ही वर्षों में तेजी से हो रही इसकी प्रगति व पसंदीदा पाठ्यक्रम में प्रवेश मिलना और गुजरात का विकास, शांति अहम है।

यूं तो गुजराती विद्यार्थियों ने आईआईटी गांधीनगर के वर्ष 2009 से प्रवेश शुरू करने से ही प्रवेश लेना शुरू कर दिया था, लेकिन अब तक यहां प्रवेश पाने वाले गुजराती विद्यार्थियों का आंकड़ा कभी भी 20 के पार नहीं पहुंचा था। इस बार ये आंकड़ा 21 पर पहुंच गया है।

नहीं बढ़ी छात्राओं की संख्या

आईआईटी-गांधीनगर में छात्राओं की संख्या नहीं बढ़ी। गत वर्ष 2013 में भी कुल 134 विद्यार्थियों में छात्राओं की संख्या 14 थी। इस वर्ष 2014 में भी 142 विद्यार्थियों में छात्राओं की संख्या 14 ही है। इनमें सर्वाधिक पांच महाराष्ट्र, चार राजस्थान, तीन आंध्रप्रदेश और एक-एक छत्तीसगढ़ व गुजरात से हैं।

सूत्रों के अनुसार वर्ष 2012 में भी 120 विद्यार्थियों में से सिर्फ नौ छात्राओं ने ही आईआईटी गांधीनगर में प्रवेश लिया था।

राजस्थानी विद्यार्थियों की संख्या घटी

आआईटी गांधीनगर में एक ओर जहां गुजराती विद्यार्थियों की संख्या में इजाफा हो रहा है वहीं राजस्थानी विद्यार्थियों की संख्या में बीते तीन वर्षों से गिरावट देखी जा रही है। वर्ष 2013 में यहां 29 राजस्थानी विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया था, इस वर्ष इनकी संख्या घटकर 24 रह गई है। हालांकि इस वर्ष आईआईटी गांधीनगर में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या में राजस्थानी विद्यार्थी महाराष्ट्र के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

इस वर्ष इतने गुजराती-राजस्थानी विद्यार्थियों ने लिया प्रवेश :

वर्ष	गुजराती	राजस्थानी	कुल विद्यार्थी
2009	10	23	108
2010	15	28	127
2011	12	22	114
2012	08	30	120
2013	17	29	134
2014	21	24	142

आईआईटी-जी में अश्विनी इकलौती गुजराती छात्रा

पसंदीदा ब्रांच, राज्य व संस्थान के विकास को देख लिया प्रवेश

अहमदाबाद

ahmedabad@patrika.com

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर (आईआईटी-जी) में इस शैक्षणिक वर्ष 2014 में 142 विद्यार्थियों और 21 गुजराती विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। वडोदरा निवासी अश्विनी नागरे 21 गुजराती विद्यार्थियों में से इकलौती छात्रा हैं जिन्होंने आईआईटी गांधीनगर में प्रवेश लिया है।

वडोदरा निवासी छात्रा अश्विनी नागरे बताती हैं कि वो इलैक्ट्रिकल से बीटेक करना चाहती थीं, क्योंकि उनके पिता भी इलैक्ट्रिकल से जुड़ा काम करते हैं। वो मूलरूप से महाराष्ट्र के नासिक जिले की रहने वाली हैं,लेकिन पिता वडोदरा की एक निजी ट्रांसफोर्मर कंपनी में सेवारत थे, जिससे उनकी किन्नर गार्डन से लेकर 12वीं तक की पूरी पढ़ाई लिखाई वडोदरा में ही हुई है।

अश्विनी बताती हैं कि उनके पास आईआईटी बॉम्बे और एमएसयू दोनों ही में कंप्यूटर साइंस में प्रवेश लेने का विकल्प था। उसे उन्होंने छोड़ दिया, क्योंकि वो भी अपने पिता तुकाराम नागरे की तरह इलैक्ट्रिकल ब्रांच में भविष्य बनाने की इच्छुक थीं और आईआईटी गांधीनगर में इसमें उन्हें प्रवेश मिल गया। अश्विनी की ऑल इंडिया रैंक 8098 व ओबीसी रैंक 1331 है।

अश्विनी बताती हैं कि वो बीटेक करने के बाद एमबीए करना चाहती हैं ताकि वो अपने परिवार की आर्थिक मदद कर सकें। अभी उनके परिवार में पिता कमाते हैं। उन पर एक भाई और एक और बहन की पढ़ाई लिखाई का भी भार है। एमबीए करने से उसके अच्छा वेतन मिलेगा, जिससे वो एमबीए करके परिवार की आर्थिक मदद करना चाहती हैं। अश्विनी कहती हैं कि वो शुरुआत से ही आईआईटी से बीटेक करने की तमन्ना रखती थीं और इसी के तहत उन्होंने तैयारी की।

अहमदाबाद में चांदखेड़ा निवासी पार्थ डाभी बताते हैं कि उन्हें आईआईटी-बॉम्बे में मेटलर्जी और आईआईटी-दिल्ली में कैमिकल ब्रांच में प्रवेश मिल रहा था, लेकिन उनकी चाहत मैकेनिकल में बीटेक की थी। आईआईटी-गांधीनगर में जब इस ब्रांच में प्रवेश मिला तो उन्होंने तत्काल इसमें प्रवेश ले लिया क्योंकि ये न सिर्फ पास में है बल्कि इसकी प्रगति भी काफी अच्छी हो रही है। डाभी की एससी केटेगरी रैंक 789 है। जेईई एडवांस में 1432 ओबीसी रैंक पाने वाले मेहसाणा निवासी हर्ष मोदी बताते हैं कि उन्होंने आईआईटी-गांधीनगर में मैकेनिकल ब्रांच में प्रवेश लिया है, ये उनकी पसंदीदा ब्रांच है।

राजस्थान के उदयपुर जिले में रहने वाले व जेईई एडवांस में 3013 रैंक पाने वाले भव्य जैन ने बताया कि उन्हें आईआईटी-मुंबई में मेटलर्जी, दिल्ली में कैमिकल में प्रवेश मिल रहा था लेकिन दोनों की काफी दूर थे। फिर आईआईटी गांधीनगर नया संस्थान है और तेजी से विकास कर रहा है। इसमें प्रवेश लेना काफी लाभान्वित करने वाला साबित होगा। इसी वजह से उन्होने गांधीनगर में इलैक्ट्रिकल ब्रांच में प्रवेश लिया है। उन्होंने कहा कि गुजरात काफी शांतिप्रिय, विकासशील प्रदेश है।

राजस्थान के मूल निवासी दीपक धारीवाल बताते हैं कि उन्हें रिसर्च से जुड़ी ब्रांच में प्रवेश लेना था। मटीरियल साइंस इंजीनियरिंग में कानपुर और गांधीनगर दो जगहों पर प्रवेश का विकल्प उनके पास था। कानपुर की तुलना में गुजरात काफी शांतिप्रिय है, जिससे उन्होंने गुजरात को चुना, ये पास भी है और विकास के भी अच्छे अवसर हैं।

(कार्यालय संवाददाता)